34

डार्विन न होता तो क्या होता!

जीवन क्या है? हम कहाँ से आए हैं? क्या हमारा पृथ्वी पर होना महज़ संयोग है या फिर कोई पारभौमिक शक्ति जिसने किसी विशेष कारण से हमें यहाँ भेजा है? हम जैसे आज हैं वह विकास की परिणति है या ऊपर वाले की कृपा? ये कुछ ऐसे सवाल हैं जिनसे हम लगातार जूझते रहे हैं। विभिन्न जीवों और उनकी प्रजातियों में लगातार हो रहे विकास के लिए डार्विन ने प्राकृतिक चयन को ज़िम्मेदार माना। अब सवाल यह है कि चयन की प्रक्रिया एकदम निरापद है या सोद्देश्य? आखिर हम किसके विकसित रूप हैं यानी हमारे पूर्वज कौन हैं? क्या इतने परिवर्तनों के बाद का इन्सान परिपूर्ण और संसार भर के जीवों के मुकाबले प्रकृति का सबसे सफल जीव है? बिलकुल भी नहीं।

63

शिक्षा को दिलचस्प बनाने का एक जतन

शिक्षण हमेशा से ही मशक्कत का काम रहा है, खास तौर पर शिक्षक/शिक्षिका के लिए। ग्रामीण क्षेत्रों में वे अक्सर संसाधनों के अभाव में परेशान रहते हैं। मगर वास्तव में, अपने चारों ओर फैले संसाधनों – फिर चाहे वो खेत, बरसात, नदी या काग-भगौड़ा ही क्यों न हों – का इस्तेमाल शिक्षण और शिक्षण-सामग्री निर्माण में किया जा सकता है। बच्चे इनके निर्माण में उत्साह से हिस्सेदारी करते हैं जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। इस मामले में दक्षिण गुजरात की कुछ आश्रम शालाओं में चल रहे एक प्रयोग से कुछ सीखा जा सकता है। यहाँ बच्चों के श्रम, समझ और पूर्व ज्ञान का मोल भी है और पढ़ाई में इस्तेमाल भी, जो शिक्षा को दिलचस्प बनाता है। ऐसा करने से बच्चे सीखते हैं और खुद की भागीदारी से दक्ष भी होते हैं।

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-16 (मूल अंक-73), जनवरी-फरवरी 2011

इस अंक में

4 | **आपने लिखा**

5 | **देर-सबेर बच्चे पढ़ना सीख ही जाते हैं**
डेनियल ग्रीनबर्ग

11 | **आवर्त सारणी**
सैम कीन

19 | **ओह! पंचायतः सामाजिक विज्ञान...**
अलक्स एम. जॉर्ज

29 | **एरिया मॉडल से लघुत्तम-महत्तम...**
एस. श्रीनिवासन

34 | **डार्विन न होता तो क्या होता!**
कैरन हैडॉक

46 | **खेल-खेल में भाषा शिक्षण**
विश्व विजया सिंह

51 | **ततैया की तिकड़मबाज़ी में फँसी...**
अलेक्ज़ेंडर पेटरूनकेविच

62 | **पहेलियों के उत्तर**
संकलित

63 | **शिक्षा को दिलचस्प बनाने का एक जतन**
के.आर. शर्मा

78 | **मिड-डे-मील**
नसीम अख्तर

81 | **सही-गलत**
रिनचिन

92 | **जुगाड़ में माहिर कैपुचिन**
संकलित